समृद्धि और सम्पन्नता का पर्व है-दीपावली

वैसे तो भारत में मनाये जाने वाले सभी त्योहारों का कोई न कोई आध्यात्मिक महात्म्य है। भारतीय संस्कृति विरासत में ये त्योहार समय चक्र के अतीत में देवताओं, दिव्य पुरुषों द्वारा अलौकिक कार्यो की साया है। परन्तु इन पर्वों में कई पर्व ऐसे होते हैं जो मनुष्य के तन और मन को प्रफुल्लित तो करते ही हैं परन्तु आस्था और आध्यात्मिकता की ऊर्जा भी पैदा करते हैं। इसी तरह मनुष्य को ख़ुशी, आस्था और भावनाओं से परिपूर्ण कर देने वाला पर्व दीपावली है। यह पर्व केवल भारत में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी मनाया जाता है। वहाँ के वे लोग अपनी-अपनी रीति से मनाते हैं जिनका सम्बन्ध किसी न किसी रूप में भारत की जमीं से जुड़ा होता है। दीपावली का पर्व सिंगापुर में 'दीपम वल्ली', थाईलैंड में 'क्रिचंध', मलेशिया में 'हरी दीपावली', दक्षिण अफ्रीका में गुजराती रीति रिवाज से तथा म्यांमार में भारत जैसी दीपावली मनाते हैं। इसी तरह आस्ट्रेलिया, केन्या, श्रीलंका, जापान, अमेरिका और इंग्लैण्ड में भी दीपावली अपने-अपने रीति रस्म के साथ धूमधाम से मनाते हैं। परन्तु सबका अर्थ और उद्देश्य लगभग एक ही होता है। लक्ष्मी की पूजा करना तथा घर में सुख समृद्धि की कामना करना।

दीपावली के पहले और बाद में अन्य पर्वों पर नजर डाली जाये तो सभी का सम्बन्ध दीपावली से जुड़ा होता है। दीपावली के पहले नवरात्रि, दशहरा मनाते हैं जिसका अर्थ है कि मर्यादा पुरुषोत्तम राम ने नौ दिन आदि शक्ति दुर्गा की साधना से शक्ति सम्पन्न बन महाबलि दशानन का वध अर्थात् बुराई पर अच्छाई की जीत दिलायी। इसके बाद दीपावली में असंख्य दीप जलाकर खुशी का इजहार करते हैं और धन की देवी लक्ष्मी का आह्वान करते हैं। वास्तव में यदि दीपावली के पर्व को आध्यात्मिक महात्म्य के साथ मनाया जाये तो मनुष्य दीन दुखी नहीं हो सकता। बदलते समय चक्र और जीवन पद्धति के कारण अब दीपावली मनाने का रूप भी बदलने लगा है। कई बार तो दीपावली के पर्व खुशी की जगह मातम में बदल जाता है। पटाखों के स्थान पर आतंकवाद को तरजीह देने वाले लोग निर्दोष लोगों की जान लेने से भी नहीं हिचकते। इसका कारण यही है कि जिन मान्यताओं और सिद्धांतों के साथ पर्व मनाने चाहिए वैसा नहीं हो पाता है। लाखों दीप तो जलाते हैं परन्तु मन में अंधेरा कायम रहता है। यह सर्व विदित है कि बाहर का दीप केवल थोड़े समय की रोशनी और खुशी प्रदान कर सकता है। लेकिन आंतरिक तम को दूर नहीं कर सकता। इसलिए हम प्रत्येक वर्ष नवशक्ति दुर्गा का पूजन करते हैं, बड़े-बड़े पुतलों में बुराई का प्रतीक लाखों करोड़ों रावण जलाते और फिर असंख्य दीप जलाकर लक्ष्मी का आह्वान करने के बाद भी न तो मनुष्य शक्ति संपन्न बन पाता, न रावण का अंत होता और न ही लक्ष्मी का वास होता है।

भौतिक धन, सम्पदा और रुपयों पैसों से संपन्न हो जाना लक्ष्मी का वास नहीं है। लक्ष्मी एक पवित्र, दिव्य, विवेकशील देवी का नाम है जहां इनका पदार्पण होता है वहां पर पवित्र, शुद्ध, स्नेहमयी और दिव्यता का वातावरण हो जाता है और लोग मूल्यों से परिपूर्ण हो जाते हैं। उनके पास स्थूल धन न होने पर भी सबसे धनवान और सुखी होते हैं। दीपावली की जो परम्परा है यदि उसके सूक्ष्मता पर प्रकाश डाला जाए तो काफी हद तक हम उसके महत्वों को अपने जीवन में उतार सकते हैं।

कैसे मनायें दीपावली का पर्व

दीपावली की मान्यता है कि इस पवित्र और ख़ुशी के पर्व पर लोग घरों की साफ-सफाई करते हैं, व्यापारी अपने पुराने खाते को समाप्त कर नये खाते प्रारम्भ करते हैं, रात्रि जागरण कर लक्ष्मी का आह्वान करते हैं आदि-आदि। इसका आध्यात्मिक अर्थ है कि हमारा शरीर भी आत्मा का घर है। इसकी बाहरी सफाई के साथ-साथ आन्तरिक सफाई पर ध्यान देना चाहिए। जहां तक हिसाब-किताब की बात है तो हमने पिछले साल व महीने जो भी गलत कर्म किये है उसका निरीक्षण कर, श्रेष्ठ कर्मों की शुरुआत करनी चाहिए। यही नहीं परमात्मा से अराधना करनी चाहिए कि सदा श्रेष्ठ कर्म करने की प्रेरणा मिलती रहे। मनुष्य का जीवन ऐसा होना चाहिए जिससे आत्म ज्योति जागती रहे और अज्ञान अंधकार सदा के लिए दूर हो जाये एवं जीवन में प्रकाश ही प्रकाश हो।

दीपावली के पर्व पर भारतीय परम्पराओं के मद्देनजर घर, ऑफिस, दुकानें तथा अपने कार्यस्थल की पूर्ण रूप से सफाई करें। सुन्दरता पूर्वक घर व ऑफिस को व्यवस्थित करें तथा सजाएं। सांयकाल पूजन विधि से धन की देवी महालक्ष्मी की पूजा प्रारम्भ कर घर के हर कोने में दीपकों से सजाएं। इस पर्व के दिन खान-पान के सन्दर्भ में कभी भी आसुरी भोजन न तो बनाना चाहिए और न ही स्वीकार करना चाहिए। नशे, धूम्रपान, मदिरा का सेवन न करें। स्नान आदि करके सच्चे मन से ईश्वर की अराधना करें। घर परिवार के सभी सदस्यों को इसमें भागीदार बनाने के साथ-साथ बच्चों को भी सम्मिलित करें ताकि बच्चों में ईश्वर और अच्छे कार्यों के प्रति श्रद्धा भावना बढ़े। पटाखे आदि का जितना हो सके कम से कम उपयोग करें। इससे कई बार अग्निकांड और दुर्घटनाएं तो होती ही है, इसके साथ-साथ ध्वनि और वायु प्रदूषण भी बढ़ता है जो हमारे तथा प्रकृति दोनों के लिए हानिकारक होता है।

दीपावली के दिन जल रहे असंख्य दीपकों से यह सीख लेनी चाहिए कि कितना भी अंधेरा हो परन्तु उसमें इतनी शक्ति होती है कि वह अंधकार को चीरते हुए वहां प्रकाश ही प्रकाश कर देता है। उसी तरह मनुष्य को धरा पर अवतरित परमात्मा शिव से शक्ति लेकर अपनी आत्मा रूपी ज्योति को ज्ञान घृत

से ऐसा जलाएं जिससे जीवन में कभी भी अंधेरा न हो। इस पर्व पर अपने अन्दर ज्ञान, प्रेम, शांति, वसुधैव कुटुम्बकम् की मशाल लेकर स्वयं को इतना प्रकाशवान बनाना चाहिए, जिससे वह खुद भी आभा से आलोकित हो और दूसरे को भी करे। यह प्रकाशोत्सव का दीपक इतना तीव्र हो कि जीवन में न तो कभी अंधेरा आये और नहीं कभी लक्ष्मी जाए तभी दीपावली का पर्व सार्थक हो सकेगा।

सौजन्य: ब्रह्माकुमारीज्

*****